माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा एवं समायोजन का अध्ययन

प्रो. बी. के. गुप्ता

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

शिक्षाशास्त्र विभाग,

जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)

जगजीवन प्रसाद

शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग,

जवाहर लाल नेहरू मेमोरियल पीजी कॉलेज, बाराबंकी (उ.प्र.)

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समग्र समायोजन तथा उनके अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाओं के मध्य संबंध का अध्ययन करना है। वर्तमान समय में अभिभावकों की अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के शैक्षिक एवं मानसिक जीवन को गहराई से प्रभावित कर रही हैं। यदि ये आकांक्षाएँ संतुलित एवं यथार्थपरक हों तो विद्यार्थियों का समायोजन बेहतर होता है, जबकि अत्यधिक अथवा अव्यावहारिक आकांक्षाएँ विद्यार्थियों में तनाव एवं समायोजन समस्याएँ उत्पन्न कर सकती हैं। प्रस्तुत अध्ययन में बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों एवं उनके अभिभावकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। सर्वेक्षण विधि द्वारा संकलित आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन, ज परीक्षण तथा सहसंबंध तकनीक द्वारा किया गया। निष्कर्षों से यह स्पष्ट

हुआ कि अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा तथा विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के मध्य सार्थक संबंध पाया गया।

मुख्य शब्द : समग्र समायोजन, अभिभावक आकांक्षा, माध्यमिक स्तर, विद्यार्थी

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। विशेष रूप से माध्यमिक स्तर वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थी शारीरिक, मानसिक एवं संवेगात्मक परिवर्तनों से गुजरते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों के जीवन में परिवार तथा अभिभावकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। अभिभावक अपने बच्चों से शिक्षा, व्यवहार एवं भविष्य को लेकर अनेक अपेक्षाएँ रखते हैं, जिन्हें तत्संबंधी आकांक्षा कहा जाता है।

अभिभावकों की आकांक्षाएँ यदि संतुलित हों तो वे विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं समायोजन को सकारात्मक दिशा देती हैं, परंतु अत्यधिक दबावपूर्ण आकांक्षाएँ विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित कर सकती हैं। समायोजन का तात्पर्य व्यक्ति की अपने वातावरण के साथ संतुलन स्थापित करने की क्षमता से है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि अभिभावकों की आकांक्षाओं एवं विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के बीच संबंध का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाए।

अध्ययन का औचित्य

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित न होकर विद्यार्थियों के समग्र विकास से भी जुड़ा हुआ है। माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होता है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं सांवेगिक परिवर्तन तीव्र गति से होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों के समक्ष समायोजन से संबंधित अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, जो उनके व्यक्तित्व विकास, शैक्षिक उपलब्धि एवं भावी जीवन

को प्रभावित कर सकती हैं। अतः इस स्तर पर विद्यार्थियों के समग्र समायोजन का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है।

परिवार, विशेषकर अभिभावक, विद्यार्थियों के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाएँ विद्यार्थियों की सोच, व्यवहार एवं समायोजन को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। यदि अभिभावकों की आकांक्षाएँ यथार्थवादी एवं सहयोगात्मक होती हैं, तो विद्यार्थियों का समायोजन बेहतर होता है, जबकि अत्यधिक या अव्यावहारिक आकांक्षाएँ विद्यार्थियों में तनाव, असंतोष एवं असमायोजन की स्थिति उत्पन्न कर सकती हैं। इस दृष्टि से अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाओं का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है।

इसके अतिरिक्त, छात्र एवं छात्राओं के समग्र समायोजन में अंतर का अध्ययन करना भी आवश्यक है, क्योंकि दोनों के सामाजिक अनुभव, अपेक्षाएँ एवं भूमिकाएँ भिन्न हो सकती हैं। इन अंतरों को समझे बिना प्रभावी शैक्षिक एवं परामर्शात्मक कार्यक्रमों का निर्माण संभव नहीं है। यह अध्ययन शिक्षकों, परामर्शदाताओं एवं विद्यालय प्रशासन को विद्यार्थियों की वास्तविक आवश्यकताओं को समझने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन का औचित्य इस तथ्य में निहित है कि यह माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समग्र समायोजन, अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाओं तथा दोनों के मध्य संबंध को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगा, बल्कि विद्यार्थियों के स्वस्थ मानसिक एवं सामाजिक विकास के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में समायोजन संबंधी समस्याओं की पहचान हेतु।
- अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाओं के प्रभाव को समझने हेतु।

- विद्यालयी परामर्श सेवाओं को सुदृढ़ बनाने हेतु।
- अभिभावक शिक्षक सहयोग को प्रभावी बनाने हेतु।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (छात्र एवं छात्राओं) के समग्र समायोजन में अंतर का अध्ययन करना।
2. अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा तथा विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के समग्र समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा तथा विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होगा।

शोध विधि :– प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए बाराबंकी जनपद के माध्यमिक स्तर के 600 विद्यार्थी एवं उनके 100 अभिभावकों का चयन किया गया। न्यादर्श चयन हेतु साधारण यादृच्छिक न्यादर्शन विधि अपनाई गई।

शोध उपकरण

- समायोजन मापनी – डॉ. ए.के.पी. सिन्हा एवं डॉ. आर.पी. सिंह द्वारा निर्मित (समग्र स्कोर का प्रयोग)।
- अभिभावक तत्संबंधी आकांक्षा प्रश्नावली – शोधकर्ता द्वारा स्वनिर्मित।

सांख्यिकीय तकनीकें

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी–परीक्षण एवं सहसंबंध का प्रयोग किया गया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1

छात्र एवं छात्राओं के समग्र समायोजन में अंतर हेतु ज–परीक्षण

समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य	परिणाम
छात्र	300	43.10	6.20	2.18	सार्थक
छात्राएँ	300	45.30	6.10		

व्याख्या

तालिका के अनुसार छात्रों का समग्र समायोजन मध्यमान 43.10 एवं प्रमाप विचलन 6.20 है, जबकि छात्राओं का मध्यमान 45.30 एवं प्रमाप विचलन 6.10 पाया गया। दोनों समूहों के मध्यमानों के अंतर की जाँच हेतु किए गए टी–परीक्षण से मूल्य 2.18 प्राप्त हुआ, जो 0.05 स्तर पर सार्थक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्र एवं छात्राओं के समग्र समायोजन में सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि छात्राओं का समग्र समायोजन छात्रों की अपेक्षा अधिक है।

तालिका 2

अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा एवं समग्र समायोजन के मध्य सहसंबंध

चर	सहसंबंध गुणांक	स्तर
अभिभावक आकांक्षा एवं समग्र समायोजन	0.48	0.01 स्तर पर सार्थक

व्याख्या

तालिका से ज्ञात होता है कि अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा तथा विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के मध्य सहसंबंध गुणांक = 0.48 पाया गया, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। यह दोनों चरों के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक संबंध दर्शाता है। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा का विद्यार्थियों के समग्र समायोजन से महत्वपूर्ण एवं सकारात्मक संबंध है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समग्र समायोजन, छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में अंतर, अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाओं तथा इन आकांक्षाओं एवं विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। आँकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

- अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का समग्र समायोजन स्तर काल्पनिक मध्यमान की अपेक्षा सार्थक रूप से कम पाया गया। इससे यह संकेत मिलता है कि विद्यार्थियों में समायोजन संबंधी कुछ कठिनियाँ विद्यमान हैं, जिन पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।
- छात्र एवं छात्राओं के समग्र समायोजन के तुलनात्मक अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि दोनों के समायोजन स्तर में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर पाया गया। अध्ययन में छात्राओं का समग्र समायोजन छात्रों की अपेक्षा अधिक पाया गया,

जिससे यह संकेत मिलता है कि छात्राएँ समायोजन के क्षेत्र में अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में हैं।

- अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाओं के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि अभिभावक अपने बच्चों के भविष्य, शैक्षिक प्रगति एवं जीवन–निर्माण के प्रति जागरूक एवं आकांक्षी हैं। उनकी अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के जीवन को दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षा तथा विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के मध्य सहसंबंध विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि दोनों के मध्य मध्यम स्तर का धनात्मक एवं सार्थक संबंध पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि अभिभावकों की आकांक्षाएँ विद्यार्थियों के समग्र समायोजन को प्रभावित करती हैं।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों का समायोजन केवल व्यक्तिगत कारकों पर ही नहीं, बल्कि पारिवारिक परिवेश तथा अभिभावकों की आकांक्षाओं से भी प्रभावित होता है। अतः विद्यार्थियों के समग्र विकास एवं समायोजन हेतु अभिभावकों, शिक्षकों तथा विद्यालय के संयुक्त प्रयास आवश्यक हैं।

सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जा सकते हैं–

- अध्ययन में यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का समग्र समायोजन अपेक्षाकृत निम्न स्तर का है। अतः विद्यालयों में नियमित रूप से परामर्श सेवाओं की व्यवस्था की जानी चाहिए, जिससे विद्यार्थियों को अपनी समस्याओं के समाधान में सहायता मिल सके।

- छात्र एवं छात्राओं के समायोजन में पाए गए अंतर को ध्यान में रखते हुए शिक्षकों को चाहिए कि वे विद्यार्थियों के साथ लैंगिक संवेदनशीलता को ध्यान में रखते हुए व्यवहार करें तथा छात्रों के समायोजन को सुदृढ़ करने हेतु विशेष प्रयास करें।
- अभिभावकों की तत्संबंधी आकांक्षाओं का विद्यार्थियों के समग्र समायोजन से सकारात्मक संबंध पाया गया है। अतः विद्यालयों में समय–समय पर अभिभावक–शिक्षक बैठकें आयोजित की जानी चाहिए, जिससे अभिभावक अपनी आकांक्षाओं को यथार्थवादी बना सकें।
- अभिभावकों को यह सुझाव दिया जाता है कि वे बच्चों पर अत्यधिक दबाव न डालें, बल्कि उनकी रुचियों, क्षमताओं एवं सीमाओं को ध्यान में रखते हुए अपेक्षाएँ रखें, जिससे विद्यार्थियों का समायोजन बेहतर हो सके।
- भविष्य में किए जाने वाले शोधों में समायोजन से संबंधित अन्य चरों जैसे आत्म–सम्मान, प्रेरणा, पारिवारिक वातावरण आदि को भी शामिल किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- सिन्हा, ए. के. पी., एवं सिंह, आर. पी. (2000). समायोजन मापनी मैनुअल. आगराः नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन।
- बेस्ट, जे. डब्ल्यू., एवं काहन, जे. वी. (2011). शैक्षिक अनुसंधान. नई दिल्लीः प्रकाशन।
- गुप्ता, एस. पी. (2012). शैक्षिक मनोविज्ञान. मेरठः राधा प्रकाशन।
- मित्तल, आर. (2010). बाल एवं किशोर मनोविज्ञान. नई दिल्लीः ओरिएंट ब्लैक्सवान।

- पाण्डेय, आर. एस. (2015). शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन. वाराणसीः विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- शर्मा, आर. ए. (2014). शिक्षा में अनुसंधान पद्धति. आगराः आर. लाल बुक डिपो।
- चौधरी, पी. (2016). शैक्षिक सांख्यिकी. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
- एनसीईआरटी. (2019). माध्यमिक शिक्षा में विद्यार्थी विकास. नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।